

3.3. शोध अध्ययन का परिवर्तन।⁵

x — x — x — x — x — x

“ परिवर्तन शब्द आंग्ल भाषा के शब्द Hypothesis का हिन्दी रूपान्तरण है। आंग्ल भाषा में शब्द व्युत्पत्ति के अनुसार Hypothesis शब्द दो शब्दों में मिलकर बना है। Hypo का अर्थ होता है कोई चीज कम या घाटी और Thesis शब्द किसी स्थापित विषय या सिद्धांत या सिद्धांत के लिए प्रयोग होता है। इस तरह Hypothesis से तात्पर्य किसी सिद्धांत पर पहुँचने या सिद्धांत का स्थापना करने से पूर्व किसी जीने वाले प्रयासों से है। किसी ~~का~~ परिवर्तन का स्थापना का परीक्षण ही सिद्धांत तक पहुँचने और सिद्धांत स्थापित करने में आधारभूत काम करता है।” १

परिवर्तन को उपलब्धता या प्राप्त-लब्धता समझें भी
पुलकित जाता है जिसका अर्थ एक उपलब्धता से होता है
जो समझने के साधनों को उपलब्धता होती है तथा शोध
कर्ता उसकी पुष्टि का प्रयास करता है। शोध अध्यापन
के समस्त क्रियाएं परिवर्तन को पर-केंद्रित होती हैं।
परिवर्तन के अभाव में वैज्ञानिक अध्यापन संभव
नहीं है। वैज्ञानिक परिवर्तन के बिना वैज्ञानिक अध्यापन
उद्देश्यहीन हो जाता है।

परिवर्तन के विषय में प्रमुख शिक्षाशास्त्रियों के
विचार प्रस्तुत हैं:-

① राउन्सेण्ड (1953) के अनुसार - "समझने के
साधनों के रूप में परिवर्तन को परिभाषित
किया जा सकता है।"²

② मैक-गुशगन (1969) के अनुसार - "परिवर्तन
रूप में परीक्षणयोग्य
शक्तिशाली सम्बन्ध के सम्बन्ध में होता है।"³

Date: / /
③ क्लेरिंगर (1978) के अनुसार - "परिवर्तन वह कल्पनात्मक अथवा वैज्ञानिक चरों के सम्बन्ध में होता है।" 4

④ गुड और स्कैट्स के अनुसार -
"परिवर्तन एक अनुमान है, जिसे अन्तिम अथवा उत्तराधी रूप से किसी विशिष्ट रूप अथवा दशाओं को व्याख्या हेतु स्वीकार किया गया है एवं जिसमें अन्वेषण को आगे पथ प्रदर्शन प्राप्त होता है।" 5

⑤ डी. ए. श्रीवास्तव सहोदय के शब्दों में -
"परिवर्तन दो या दो से अधिक चरों के अनुमान पर आधारित कल्पनात्मक, तर्कपूर्ण कार्यक्षम प्रस्तावित और पत्र परीक्षण योग्य कथन है जो यह बताता है कि अनुसंधानकर्ता क्या करना चाहता है (अर्थात् समस्या कैसे हल हो सकती है या अन्वेषण आगे कैसे होना है। परीक्षण में यह कथन सत्य भी सिद्ध हो सकता है और शक्य भी सिद्ध हो सकता है।)" 5

वास्तव में परिवर्तन के द्वारा अनुसंधानकर्ता के ~~वैज्ञानिक अनुमान~~ के विशिष्ट मार्ग प्रसक्त चरों के बीच सम्बन्ध को व्याख्याित करने में सफल हो जाता है और परीक्षण के फलस्वरूप अनुसंधान को विशिष्ट निश्चित करता है।